शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सच्चे लोक हितैषी गोस्वामी तुलसीदास

मोहन पाण्डेय
प्राध्यापक हिन्दी
श्रीनाथ संस्कृत महाविद्यालय
हाटा, कुशीनगर, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत की अध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना को एक करने में मध्यकालीन संत गोस्वामी तुलसीदास का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने अपनी भक्ति भावना से पूरे समाज में साम्य स्थापित किया। उनका लोक संग्राहक रूप अद्भुत है जिस ज़माने में तुलसीदास हुए वह समय बड़ा ही कठिन था। ऐसे में आमजन के हृदय को तुलसीदास ने शीतलता प्रदान की और उन्हें उच्च भावभूमि पर प्रतिष्ठित किया। प्रस्तुत शोध पत्र में गोस्वामी तुलसीदास के लोक हितैषी विचारों पर प्रकाश डाला गया है।

लोक हितैषी संत तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास ने भूतल पर जनमानस के कल्याण के लिए अपनी तपस्या व साधना को समर्पित किया। मानव के जीवन में कोई कष्ट न हो, किसी प्रकार की अज्ञानता न रहे और प्रेम की अविरल धारा निरन्तर प्रवाहित होती रहे, वह भी बिना भेदभाव व ऊँच नीच के। इसी कारण गोस्वामी जी ने 'रामचरित मानस' में अज्ञानता व ज्ञान, चरित्र व चरित्रहीनता, आचरण व नैतिकता के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व न्यायिक दृष्टिकोण का सूक्ष्म चिन्तन प्रस्तुत किया। जीवन में उपस्थित होने वाली व्यावहारिक कठिनाईयों का उपाय बताया। जीवन के सभी अंधकार ज्ञान से छंटते है। ज्ञान की प्राप्ति गुरु की कृपा से होती है। वे गुरु की महत्ता भगवान शंकर के रूप में प्रतिष्ठित करते है।

वन्दे बोधमयम् नित्यं गुरू शंकर रूपिणम् ।
यमाश्रितों हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र बन्धते।1।

अर्थात ज्ञानमय, नित्य शंकर रूपी गुरु की मैं वन्दना करता हूँ। जिनके आश्रित होने से ही टेढ़ा चन्द्रमा भी सर्वत्र वन्दित होता है। वहीं

बंदऊँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नरस्य हरि।
महामोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर।2।

उन्होंने गुरु को सर्वत्र महिमा मण्डित किया है। वे कहते है कि गुरु कृपा के समुद्र और नर रूप में श्री हरि ही हैं, जिनके वचन महामोह रूपी घने अंधकार का नाश करने के लिए सूर्य किरणों के समान हैं। ब्राह्मणों की भी उन्होंने वन्दना की जो अज्ञान से उत्पन्न सन्देहों को हरने वाले है। इस प्रकार विप्र वंदन के द्वारा गोस्वामी जी ने जगत में आरदणीय जनों को उचित स्थान दिलाने का प्रयास किया। वहीं संतो को भी इसलिए पूजित बताया कि वे स्वयं दुख को सहकर दूसरों के दुखों को ढंकते है।

साधु चरित सुभ चरित कपासू, निरस विसद गुनमय फल जासू।।
जो सहि छिद्र दुरावा, वंदनीय जेहि जग जसपावा।।3।।

उनकी दृष्टि में संत चलते फिरते तीर्थ हैं।

मुद मंगतुमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथ राजू ।।

रामभक्ति जहै सुरसरि धारा।सरसई ब्रह्न विचार प्रचांरा ।।4।।

जीवन की झंझटों से मुक्ति व आत्मा की शांति के लिए सतसंग आवश्यक है - उनकी दृष्टि में सत्संग से मानव के समस्त प्रकार के विकर नष्ट हो जाते हैं तथा उनमें मानवीय गुणों का भण्डार संचित हो जाता है।

बिनु सत्संग विवेक न होई। रामकृपा बिनु सुलभ न सोई।।5।।

सत्संग के बिना विवेक नहीं होता और श्रीराम की कृपा बिना सहज सत्संग नहीं मिलता है।

सत्संगत मुद मंगल मूला, सोई फन सिधि सब साधन फूला।।6।।

सत्संगति ही आनन्द व कल्याण की जनक है। सत्संग की प्राप्ति ही फल है और सब साधन तो फूल है। सभी तरह के व्यक्तियों सज्जन व दुर्जन का कल्याण सत्संग से ही संभव है।

सठ सुधरहिं सत्संगति पाई। पारस परस कुघात सुहाई ।।7।।

क्योंकि यदि दुर्भाग्यवश सज्जनों को कुसंगति मिल भी जाती है वे वहां सांप की मणी के समान अपने गुणों का ही अनुसरण करते हैं। यह सब सत्संग का ही प्रभाव है।

मार्ग निर्देशन के क्रम में गोस्वामी जी ने बेहिचक यह बताया कि दुष्टों से सावधा रहना चाहिए।

बहुरि बंदि खन जन सतिभाए। जे बिनु काज दाहिनेहु बाए ।।8।।

श्री रघुनाथ जी का स्मरण समस्त पापों को हरने वाला है। ऐसा बताकर गोस्वामी जी ने मानव समाज की आत्मिक शांति का मार्ग प्रशस्त किया है। बालकाण्ड में ही विद्या की देवी सरस्वती की महिमा और उनकी आवश्यकता भी मानव समाज के लिए स्थापित किया।

भगति हेतु विधि भवन विहाई। सुमिरन सारद आवति धाई ।।9।।

यह निश्चित है कि इच्छाशक्ति और आस्था से सुमिरन करने पर मां शारदा अपने साधक पर कृपा अवश्य करती है, क्योंकि कवि के स्मरण पर वे ब्रह्मालोक को छोड़कर दौड़ पड़ती है।

मानव के मोह नाश का प्रमुख कारण श्री राम से नाता जोड़ना भी है।

रामनाम मनिदीप धरू, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरेहुँ, जौ चाहसि उजियार ।।10।।

हे मनुष्य! यदि तू भीतर व बाहर दोनों ओर उजाला चाहता है तो मुखरूपी द्वार की जीभ रूपी देहली पर रामनाम रूपी मणी दीपक को रख। जब प्रयाग पहुँचकर भरत जी गंगा जी के लहरों को देखते हैं तो उनका शरीर पुलकित हो उठता है और मां गंगा से भीख मांगते है।

मांगहू भीख त्यागे निज धरमू।

और कहते हैं -

अरथ न धरम न काम रूचित गति न चहछु निरवान।
जनम-जनम रति राम पद यह वरदानु न आन।।11।।

यहां भरत जी के माध्यम से गोस्वामी जी ने आध्यात्मिक आस्था व प्रकृति के प्रेम का सजीव प्रस्तुतीकरण किया है। प्रेम की महत्ता असीम है चित्रकूट की यात्रा भरत जी पैदल ही कर रहे हैं।

नहिं पद तान सीस नहिं छाया। पेमु नेमु व्रत धरमु अमाया ।।12।।

अधिकार न्याय व प्रम का अनूठा उदाहरण - केवट द्वारा पांव पखारने के बाद ही नाव पर चढ़ाने की विनती करने पर प्रभु स्वीकार करते है। केवट कहता है कि -

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बरू तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पायँ परवारिहौ ।।13।।

वहीं जब प्रभु उतराई देना चाहते हैं तो केवट मना करते हुए उलटे पांव घर लौट जाता है। शील व लज्जा का अनुपम उदाहरण मां जानकी के माध्यम से तब प्रस्तुत किया गया है जब ग्रामीण महिलाएँ उनका परिचय पूछती हैं। मानस में माता का हित सर्वोपरि है और पिता की आज्ञा का पालन भी आवश्यक है। इस लोक हितैषी नीति को गोस्वामी जी ने बहुत सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने अहंकार को हमेशा त्याज्य बताया है क्योंकि अभिमान से सब कुछ नष्ट हो जाता है। दोहावली में प्रसंग है -

हम हमार आचार बड़ि भूरि मार धरि सीस।
हठि सठि परबस परत। जिमि कीर कांस कृमि कीस ।।14।।

इन्द्रियों के उचित व्यवहार पर भी उन्होंने जोर दिया है -

कहिबे कहं रचना रची सुनिबे कहं किए कान।
धरिबे कहं चित हित सहित परमारथहि सुजान ।।15।।

'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में आचार्य राचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि हिन्दी काव्य की सब प्रकार की रचना शैली से ऊपर गोस्वामी जी ने अपना ऊँचा आसन प्रतिष्ठित किया है। यह उच्चता किसी को प्राप्त नहीं है। मानस में उनका जीवन की अनेक दशाओं का समावेश गोस्वामी जी ने किया है अपनी दृष्टिविस्तार के कारण ही तुलसीदासजी उत्तरी भारत की समग्र जनता के हृदय मंदिर में पूर्ण प्रतिष्ठा के साथ विराजमान रहे हैं।

तुसीदास जी ने भारतीय जनता का प्रतिनिधित्व किया है। इनकी वाणी की पहुँच मनुष्य के सभी व्यवहारों तक है। एक ओर तो वे व्यक्तिगत साधना का पथ प्रदर्शित करते हैं तो दूसरी ओर सामाजिक नीति-नियमों का मार्गदर्शन भी करते चलते हैं। उनके साहित्य में व्यक्तिगत साधना के साथ ही साथ लोकधर्म की अत्यन्त उज्जवल छटा विद्यमान है।

गोस्वामी जी ने समाज के समक्ष मातृप्रेम का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। प्रभु श्री राम के मातृप्रेम की उपमा सुयश सभी जन की मधुरता और सुगन्धि से दी गयी है।

मापप भलि चहु बंधु की जल माधुरी सुबाष।
अनुज सखा संग भोजन करहीं।मातु पिता अग्या अनुसरहीं।।

जनमें एक संग सब भाई। भोजन सयन केलि लरकाई ।।16।।

पत्नी प्रेम का अनूठा उदाहरण भी मानस में देखने को मिलता है। वन गमन के समय श्रीराम ने सोचा कि यदि सीता जी को रोका तो उनके प्राण ही नहीं बचेंगे। सीता हरण की आकुलता अकथनीय प्रेम की अवधि है।

हंस गवनि तुम्ह नहि वन जोगू। सुनि अयजसु मोहि देइहि लोगू।।

मानस सनिय सुधा प्रतिपाली। जिगहि कि लवन प्योधि मराली ।।

नवसारक वन विहरन सीला। सोह कि कोकिय विपिन करीला ।।

देखि दशा रघुपति जियं जाना। हठि राखें नहिं राखिहिं प्राना ।।

कहेउ कृपाल भानुकुथ नाथा । परिहरि सोचु चलहु वन साथा ।।

आश्रम देखि जानकी हीना । भए विकन जस प्रकृत दीना ।।

तत्व प्रेम की मम अरू तोरा । जानत प्रिय एकु मनु मोरा ।।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राजा को हमेशा प्रजा पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि जिसके राज्य में प्रजा दुखी रहती है वह राजा सफल नहीं माना जाता।

जासु राज प्रिय प्राय प्रजा दुखारी । सो नृपु अवसि नरक अधिकारी ।।

मानव को श्रीराम के एक पत्नी व्रत के नियम का पालन करने की प्रेरणा लेना चाहिए यह पूरी तरह लोकहित की भावना को स्थापित करता है।

एक नारि सब व्रत रत झारी । ते मन बच क्रम पति हितकारी।।

मनुष्य के चतुर्दिक अभ्युदय का मार्ग धर्म से होकर जाता है। गोस्वामी जी ने बार-बार धर्म पर चलने का संदेश दिया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने लिखा है, राम की लीला क्षेत्र के भीतर उन्होंने धर्म के विविध रंगों का प्रकाश देखा। धर्म का प्रकाश अर्थात ब्रह्म के सत्स्वरूप का प्रकाश इसी नाम रचनात्मक व्यक्त जगत के बीच होता है।

"हमारे जीवन की पूर्णता कर्म (धर्म) ज्ञान और भक्ति तीनों के समन्वय में है। उनकी भक्ति भावना में यद्यपि तीनों का योग है पर धर्म का योग पूर्ण परिमाण में है। धर्म का तिरस्कार होने पर भरत जैसा सर्वोत्कृष्ट पात्र शिष्ट मर्यादा का उल्लंघन करता है। मां ने धर्म की पूर्ण शुद्ध और व्यापक भावना का उल्लंघन किया है। यह विचार स्पष्ट करता है कि लोक को अपने धर्मपथ पर चलने का सुगम व तर्कसंगत रास्ता गोस्वामी जी ने दिया जो अभ्युदय का परिचायक है। (चिन्तामणि भाग - 1)

'विनय पत्रिका' में तुलसीदास जी ने धर्म के विरोधी को राम का विरोधी कहा है।

जाके प्रिय न राम वैदेही।
सो नर तजीअ कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही।

निष्कर्ष

आज के परिवेश में जब लोग धन और ऐश्वर्य देखकर ईर्ष्या करते हैं और एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं। ऐसा न करने की सलाह भी गोस्वामी जी ने अयोध्याकाण्ड में दी है। उनके सम्पूर्ण मानस में समाज की वास्तविक संरचना, संचालन, नैतिकता आदर्श, न्याय अने माध्यमों से मानव कल्याण की कामना की गयी है। ये मार्ग आज की विभिषिका वाली परिस्थितियों से उबारने में सफल हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- *रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस प्रकाशन गोरखपुर*
- *मानस रहस्य, हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस प्रकाशन गोरखपुर*
- *चिन्तामणि भाग - 1, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी*
- *दोहावली, गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस प्रकाशन, गोरखपुर*